वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पानू खोलिया के कथा साहित्य की प्रासंगिकता

श्रीमती ललिता जोशी*

सारांश

साहित्यकार अपनी कृतियों में अपने युग की अभिव्यक्ति करने मात्र के लिए सृजन नहीं करता है, वरन् मानवीय सुख–दुख तथा मनुष्य की मनोवृत्तियाँ उसके सृजन का मूल आधार कही जा सकती हैं। मानवता की भावना और मनुष्य के मनोविज्ञान से साहित्य का अटूट सम्बन्ध होता है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। डॉ0 मक्खन लाल शर्मा के इस कथन में विद्यमान यथार्थ का समर्थन किया जा सकता है। ''साहित्य में केवल वर्तमान स्थिति का ही चित्रण होता रहे यह न सम्भव है और न कम्य, आधुनिक क्षण वैज्ञानिक दृष्टि से अपने भीतर अपने से पूर्व तथा भविष्य के क्षणों को भी निहित किए हुए है। अतः तात्कालिक क्षण को प्रमाणिक मानकर चलने वाली धारणा अवैज्ञानिक तथा विकास परम्परा को न समझ पाने का परिणाम है।''

मानवतावादी दृष्टि एवं मनोविज्ञान की आधार भूमि पर रचा गया साहित्य केवल कालखण्ड का साहित्य बनकर सीमित नहीं रह जाता न ही उसकी महत्ता कालान्तर में कम होती है। कथाकर पानू खोलिया के कथासाहित्य की प्रासंगिकता का अध्ययन विशेष इसी दृष्टि से किया जाना समीचीन होगा।

प्रस्तुत शोध पत्र में पानू खोलिया के कथा साहित्य की आंचलिकता के सन्दर्भ में विष्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द– आंचलिकता, परम्परावादिता।

प्रस्तावना

कुमाऊँ अँचल के साहित्यकारों में पानू खोलिया साठोत्तरी काल के कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं, साहित्यिक दलबन्दी से दूर प्रकृति की गोद में जन्मा यह साहित्यकार यदि साहित्य का मौन साधक कहा जाय तो अतियुक्ति न होगी। आपका जन्म आर्थिक रूप से विपन्न एक सामान्य परिवार में हुआ लेकिन पिता के परिश्रम तथा कर्मठता के चलते बालक पानू खोलिया को अभाव की प्रतीति प्रायः नहीं हुई। बाल्यकाल से एम0ए0 तक शिक्षा प्राप्त करते हुए तथा बी0टी0सी0 करने के उपरान्त कुछ समय तक शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए अल्मोड़ा जिले के ग्रामीण परिवेश से आपका निकट का सम्बन्ध रहा है। आपने समाजिक जीवन के यथार्थ तथा वहाँ की ज्वलन्त समस्याओं को करीब से देखा और समझा था। मानवतावादी दृष्टि के धनी तथा यथार्थ के चितेरे खोलिया ने अपनी अधिकांश कथा कृतियाँ कुमाऊँ के ग्रामीण परिवेश को लेकर ही लिखी हैं। गोरखा शासकों की लूटपाट अमानवीय अत्याचार तथा दमन के फलस्वरूप कुमाऊँ की अर्थव्यस्था जर्जर हो चुकी थी और जनजीवन हताशा और निराशा के चलते जड़वत हो चुका था। उक्त कुशासन से उबरने में यहाँ के निवासियों को बहुत अधिक समय तो लगा ही परन्तु सुखद स्थिति तक पहुँचने का संघर्ष अब तक चल रहा है। यहाँ की जनता का पानू खोलिया ने अपनी कथाकृतियों में जीवन्त चित्रण किया है। उच्च शिक्षा जगत राजकीय सेवा का अवसर प्राप्त हुआ और अब उन्होंने ग्रामीण परिवेश के अतिरिक्त शहरी परिवेश को भी निकट से देखा। दो विभिन्न प्रकार के परिवेशों को देखने और समझने के उपरान्त उनकी रुचि तथा विचारधारा उन्मेश हुआ। इस सम्बन्ध में उन्होंने वाहन शीर्षक उपन्यास में लिखा है कि ''मैं कभी किसी वाद या विचारधारा से जुड़ा नहीं। मेरी अपनी विचारधारा मानवतावादी विचारधारा है। मुझे अभावग्रस्त और निम्न समाज के लोगों से सदा सहानुभुति रही है और मैंने उसे कलम के माध्यम से उजागर किया। मैं साहित्यिक या राजनीतिक दलबन्दी या खेमेबाजी से सदैव दूर ही रहा हूँ और यही मुझे अच्छा लगता है। मैं पठन–पाठन व लेखन को समर्पित हूँ और यही सब कुछ करने में मुझे सुख मिलता है।'' यहाँ यह कहना उचित होगा कि पानू खोलिया का अधिकांश कथा साहित्य जनपद मुख्यालय अल्मोड़ा तथा उसके निकटवर्ती ग्रामीण समाज से सम्बन्धित है और उसमें मानव के साथ घटित होने वाली सभी समस्याओं तथा परिस्थितियों का चित्रण मिलता है।

कुमाऊँ के जिस परिवेश तथा जीवन का चित्रण खोलिया ने मुख्य रूप से किया है, वहाँ के निवासियों तथा समाज के सम्बन्ध में यह समझना आवश्यक है कि कुमाऊँ का समाज देश की विभिन्न भागों से आई अनेक जातियों तथा यहाँ के आदिवासियों की संस्कृतियों के तालमेल से बना है। कुमाऊँ के निवासी कौन हैं, इस सम्बन्ध में यह जानना महत्वपूर्ण है कि यहाँ पहले से निवास कर रही जातियों/ जनजातियों के अतिरिक्त गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा कुरूक्षेत्र

* शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड

(हरियाणा) तथा नेपाल आदि से आकर यहाँ लोग बसते रहे हैं। यहाँ आज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चार वर्णों के लोग रहते हैं। जिनकी संस्कृति में समय बीतने के साथ अत्यधिक समानता स्पष्ट देखी जा सकती है। कुमाऊँ का इतिहास ग्रन्थ के लेखक बद्रीदत्त पाण्डे ने इन्हीं तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि ''शूद्रों को छोड़कर अन्य सब जातियां प्रायः भारतवर्ष में जातियों के केन्द्र स्थल मध्य एशिया से आयीं। वहीं से वे सर्वत्र फैलीं। कुमाऊँ में बसी जातियों का परिचय देते हुए यथा सम्भव पांडे जी ने विभिन्न जातियों से सम्बन्धित मूल स्थानों का उल्लेख भी किया है। उन्होंने स्वीकार किया है कि ''कूर्मांचल में जो भी जातियों आकर बसी हैं, वे सब भ्रातृ–भाव के बंधन से बंधी हैं। हरिजन, खस, किरात, राजी–किरात, शक, हूण, आर्य सब जातियों की जन्म–भूमि अब एक है, उनके अधिकार एक हैं, उनमें कोई भेदभाव नहीं है। वे सब एक ही जननी जन्म–भूमि की सन्तान है।'' कुमाऊँ के पर्वतीय जन से आशय यह नहीं कि वहाँ के निवासी मूलतः यहीं पैदा हुए और इनका मूल स्थान कुमाऊँ ही है।

पानू खोलिया मुख्यतः निम्न मध्यवर्ग के कथाकार हैं, जिनके तीन प्रकाशित कहानी–संग्रह – 'अन्ना' दण्डनायक तथा 'एक किरती और' हैं। आपने पाँच उपन्यास भी लिखे हैं जिसमें से तीन पुस्तक रूप में प्रकाशित हैं जबकि शेष दो आंचलिक उपन्यासों ''जो अपने थे'' तथा '8 अपना एक और '' का साप्ताहिक हिन्दुस्तान जैसी राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका में धारावाहिक प्रकाशन सन 1967–68 के मध्य होता रहा है। जो अपने थे उपन्यास की हस्तलिखित प्रति लेखक के पास सुरक्षित है। प्रसंगानुसार संकेत किया गया है कि गोरखा शासन की लूट–पाट के उपरान्त सम्पूर्ण कुमाऊँ आर्थिक रूप से पंगु हो चुका था। शिक्षा का प्रचार–प्रसार न होने के कारण जनता प्रायः अशिक्षित थी। सरकारी नौकरी तथा वाणिज्य की स्थिति सुखद नहीं थी। समाज का सबल वर्ग निर्बलों का बहुविध शोषण करता था। पुरूष प्रधान समाज होने के कारण स्त्रियों की दशा अत्यधिक शोचनीय थी। नारी को पुरूष समाज व्याभिचार के लिए खुलेआम इस्तेमाल कर तथा रखैल के रूप में भी रख लेता था। निम्न वर्ग की सामाजिक स्थिति चिन्ताजनक होने के कारण जर, जोरू और जमीन के लिए सबल पुरूष छल कपट का सहारा लेकर अपने ही भाई–भतीजों की सम्पत्ति हड़पने को उद्यत रहता था। बालिकाओं की शिक्षा अर्थात स्त्री शिक्षा के प्रति समाज में उपेक्षा और नफरत का भाव था। ग्रामीण जीवन को लेकर उपन्यास तथा कहानियाँ लिखने के उपरान्त राजकीय सेवा में राजस्थान चले जाने के उपरान्त पानू खोलिया ने शहरी जीवन को भी करीब से देखा। स्वयं प्राध्यापक होने के कारण अपने पेशे के लोगों को और उनके यथार्थ की समीक्षा और शहरी मध्य तथा निम्न वर्ग के जीवन का चित्रण बड़ी सफलता के साथ किया।

शहरी जीवन से सम्बन्धित 'अन्ना' संग्रह की कहानी 'रोशनी वाला छेद' तथा 'चौंध' कहानी के पात्र क्रमशः चिरंजी तथा हरचरना निम्न वर्ग से सम्बधित पुरूष पात्र हैं जो जीवन निर्वाह के लिए अपना काम ईमानदारी से करते हैं। चिरंजी को अपने परिश्रम पर कच्चा व बदबूदार चमड़ा ढोने के कार्य पर गर्व है। चिरंजी का गर्व इन पंक्तियों से साफ झलकता है– ''मैं कहता हूँ लाख गरीब हो जाये इंसान इतना गन्दा धन्धा नहीं कर सकता ..... लेकिन हरिजन कर सकता है क्योंकि वह बेचारों में भी बेचारा है, गरीब में भी गरीब है, न कोई इज्जत न औकात। उसे तो इंसान माना ही नहीं जाता... यह है हमारा समाज कमीना समाज, मगर में पूछता हूँ कि क्या हरिजन इंसान नहीं होता। चिरंजी उपकार मानने वाला स्वाभिमानी पात्र है। अन्ना को अपनी माँ और अपनी भाभी के भरोसे छोड़कर सेना में भरती हो जाता है। छुट्टी पर बस से घर आते हुए वह अपने घर के निकट पत्नी मुगियां को परपुरूष से बात करते और हंसते हुए देखता है और उसकी हत्या करने का निश्चय कर लेता है। हरचरना रात में ज्यौं ही पत्नी मुगियां के हत्या के इरादे से चाकू उसके सीने की ओर ले जाता है, पराशक्ति के साथ माँ का दूध पीने के लिए माँ के सीने से चिपके हुए अपने बेटे को देखकर मुगियां को चाकू मारने का अपना इरादा त्याग देता है। संदेह में विवेक खो बैठे हरचरना की पुत्र वत्सलता उसे अपराध करने से बचा लेती है। स्पष्ट है कि उचित अवसर संदेह के फलस्वरूप राक्षस बने हरचरना की इंसानियत जाग उठती है। इकलाह कहानी आंचलिक है और इसके दो पुरूष पात्र में से बड़ा पिरमया और छोटा लक्षम है। इनके माता–पिता दोनों एक पखवाड़े के अन्तराल में चल बसते हैं और मरने से पूर्व कुछ आभूषण तथा विक्टोरिया छाप के चाँदी के सिक्के अपने भाई रूबल सिंह को सौंप कर अनाथ बच्चों की देख–रेख करने की विनती करते हैं। धन, सम्पत्ति और जमीन जायदाद पर दृष्टि गड़ाये सबल सिंह छोटे भाई लक्षम को बुरे व्यसन सिखाकर अपना चेला बना लेते हैं और अपने ही भाई के बच्चों का घर उजाड़कर उनकी सम्पत्ति हड़पने का खेल प्रारम्भ कर देते हैं। बड़े भाई–पिरमिया की पत्नी एक बच्चे को जन्म देकर मर जाती है और छोटा भाई लक्षम सबल सिंह के इशारे पर अपने भाई पिरमिया से जमीन जायजाद में से अपना हिस्सा मांगता है। लछम सबलसिंह का हाथ है वह अपने भाई लक्षम से कहता है –''तुझे हिस्से का इतना गुमान है। कल की ऐसी–तैसी .... अभी पकड़ अपना हिस्सा। तू धौस किस पर जमा रहा है। मगर कसकर अपनी जुबान पर काबू पा लिया, पिरमिया को समझने में देर ना लगी लछम के मुख से कौन बोल रहा है। इसकी इस अकड़ के पीछे किसकी टेक है। कल इसका हिस्सा इसे मिला और परसों तीन तेरह हुआ। सबल चाचा इस वृद्वावस्था में दूसरों के घर को लूटकर यह किस जन्म के लिये पुण्य बटोर ले जा रहे हो तुम। इस प्रकार पानू खोलिया ने अपनी निम्न तथा

मध्यम वर्ग से सम्बन्धित कहानियों में कुमाऊनी समाज के यथार्थ का सजीव चित्रण किया है।

समातंम्योत्तर काल के उपरान्त भी कुमाऊनी समाज में अनेक परम्परागत बुराईयाँ जैसे–स्त्री को पशुवत समझना अवैध सन्तान होना, दूसरे की सम्पत्ति हड़पना स्वार्थ सिद्धि के लिए छल कपट करना, स्वाभिमान की रक्षा के नाम पर मुकदमे बाजी करना, पत्नी के रहते रखैल रखना जैसी सामाजिक बुराईयाँ समाप्त होने का नाम नहीं ले रही थीं। असत्य तथा कमजोर पति को छोड़कर आत्म सुख के लिये स्त्रियों का परपुरूष गामी होना आम बात थी। बच्चों के पालन–पोषण तथा सन्तान की प्राप्ति के उद्देश्य से भी स्त्रियाँ जान की परवाह न कर व्यभिचार कर लेती थीं। दण्डनायक शीर्षक कहानी संग्रह की पनचक्की कहानी का भौना अपनी पनचक्की को लेकर मुकदमा लड़ता है, वकील की फीस न दे पाने पर एक अंग्रेजी मेम को अपना बेटा बेच देता है। उसकी पत्नी इस सदमे से उबर नहीं पाती और मर जाती है। भौना मुकदमा जीत जाता है और खुशी में अपने दोस्तों को शराब व बकरा खिलाता है लेकिन अकेला भौना अन्ततः अपना घर छोड़कर कहीं और चला जाता है। 'एक किरती और' संग्रह की अधिकांश कहानियाँ आंचलिक हैं और इनमें कुमाऊँ अंचल अपनी सभी पारम्परिक बुराइयों के साथ सजीव हो उठा है। इन कहानियों में कुमाऊँ का परम्परागत युग जीवन, यहाँ का समाज और संस्कृति सुरक्षित है। इन कहानियों तक का कुमाऊँ है। आज जब हम प्रासंगिकता की दृष्टि से पानू खोलिया के काव्य साहित्य पर विचार करेंगे तो हमें आज के कुमाऊँ और तब के कुमाऊँ की स्थिति का तुलनात्मक परिदृश्य स्पष्ट परिलक्षित हो जायेगा। पानू खोलिया का कथा साहित्य अपने समय के समाज संस्कृति और परिस्थितियों का इतिहास कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। शिक्षा के प्रचार प्रसार आधुनिकता बोध, सरकार के प्रयास व नियम कानून तथा अन्य व्यवस्थाओं के चलते आज का कुमाऊनी समाज सर्वथा नवीन कलेवर प्राप्त कर चुका है। आज के समाज में स्त्री पुरूष व पति–पत्नी की स्थिति को देखकर और समझकर वह सब असत्य सा लगेगा जो खोलिया जी की कहानियों में चित्रित है।

पानू खोलिया के तीन प्रकाशित उपन्यासों 'सत्तर पार के शिखर' 'टूटे हुए सूर्य बिम्ब' तथा 'वाहन' में से प्रथम दो में उन्होंने प्राध्यापक जीवन का पृष्ठभूमि पर परिवार की स्थिति तथा 'दम तोड़ती विवाह' नामक संस्था से सम्बन्धित समस्या का चित्रण किया है। जबकि 'वाहन' शीर्षक आत्मयात्मक उपन्यास आंचलिक विशेषताओं से युक्त है। 'सत्तर पार के शिखर' का पुरूष पात्र पवन कुमार जोशी प्राध्यापक है जिसने जीवन पर्यन्त संघर्ष किया है। उसका विवाह एक सम्पन्न घर से सम्बन्धित युवती शकुन्तला से होता है जो पढ़ाकू और शरीर से कमजोर पति को नापसन्द करती है। पत्नी शकुन्तला स्वतंत्रता चाहती है और उसकी दृष्टि पति व बच्चों पर न हो कर उच्च पद पर असीन पति की पेंशन तथा मृत्यु उपरान्त पत्नी को मिलने वाली धनराशि पर रहती है। वह पति से अपना और बच्चे का मासिक खर्च लेकर मायके में रहती है। शकुन्तला का निरन्तर प्रयास रहता है कि वह पति को निरन्तर कष्ट देती रहे ताकि उसका स्वास्थ्य ठीक न रहे और उसके लिए जीवित रहना असम्भव हो जाय। प्रो0 पवन कुमार जोशी निरन्तर अस्वस्थ रहते हुए तथा पत्नी द्वारा पैदा की गई समस्याओं का समाधान करते हुए अपनी दो बेटियों की शिक्षा तथा उनके भविष्य को लेकर चिंतित रहता है। टेलीफोन विभाग में कार्यरत कुन्दन नाम की एक महिला जिसका पति नहीं है और वह एक पुत्री की माँ है, प्रो0 जोशी, उनके स्वास्थ एवं उनकी स्थिति को समझते हुए उनकी ओर आकृष्ठ होती है लेकिन दोनों के चाहते हुए भी वे विवाह के बन्धन में नहीं बंध पाते। अन्त में पवन कुमार जोशी अपनी नाजुक स्थिति को देखकर अपने जीवन का अन्त निश्चित मानकर वसीयत लिखते हैं। जिसके अनुसार उनकी सेवा के समस्त लाभ पत्नी शकुन्तला को और पार्थिव शरीर कुन्दन को मिलता है। इस प्रकार एक तालमेल रहित विवाह पवन कुमार जोशी के अन्त का कारण बनता है। इस प्रकार की स्थिति आज भी हो सकती है यदि पति पत्नी एक दूसरे में भली प्रकार समझे–बूझे बिना अनुभवी माता–पिता या अन्य शुभेच्छुओं की सहमति और सलाह के बिना किसी लालच में विवाह कर लेते हैं तो इस प्रकार के विवाह के दुःखद तथा असफल होने की सम्भावना आज भी विद्यमान है ही। पानू खोलिया ने स्वयं भी विवाह संस्था से सम्बन्धित मूल्यों पर सम्यक विचार किए जाने की आवश्यकता जताई है।

'टूटे हुए सूर्य बिम्ब' शीर्षक पानू खोलिया का उपन्यास प्रतीकात्मक है जिसमें उच्च शिक्षा से जुड़े परन्तु संघर्ष की दृष्टि से लगभग समाज स्थितियों से उबरे दो प्राध्यापकों प्रो0 नरेश कुमार की समस्या पत्नी के विवाह पूर्व के प्रेम सम्बन्धों से उत्पन्न हुई है और वह सादगी पसन्द व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के पुरूष हैं जबकि प्रो0 कोशल ठाट–बाट और मौजमस्ती का जीवन बिताने की कला को जीवन का आधार मानते हैं। प्रो0 कौशल यथाशक्ति प्रर्याप्त करते हैं कि प्रो0 नरेश कुमार अपने अन्तर्मुखी खोल से बाहर निकलकर उनके साथ युक्त आचरण करने के आदि बने। प्रो0 कौशल स्थान्तरित होकर अन्यत्र चले जाते हैं और अब प्रो0 नरेश कुमार अपने दर्शन–चिन्तन के अनुसार कार्य करने लगते हैं। धीरे–धीरे दोनों मित्रों में इतना अन्तर आ जाता है कि एक–दूसरे की बात सुनना तो दूर, अब वे दोनों एक–दूसरे की बात को बकवास कहने लगते हैं। उच्च शिक्षा जगत से जुड़े प्राध्यापकों को अन्य प्राध्यापकों से मित्रता विचार व रूचि के मिलने पर ही करनी चाहिए तथा अपने घर, परिवार तथा संस्कारों की अनदेखी प्रायः नहीं करनी चाहिए। व्यक्ति की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपनी

स्थिति और परिस्थिति का ध्यान रखते हुए भी आधुनिकता की मुख्यधारा से जुड़कर प्रगति कर सकता है।

'वाहन' उपन्यास के मुख्य पात्र सबल सिंह की परम्परा वादिता, जिद्दी स्वभाव तथा वैचारिक संकीर्णता का चित्रण है। सबल सिंह सन्तान को जन्म न देने के कारण अपनी पहली पत्नी सोर्याली को इस कदर दुःखी रखते हैं कि वह घर छोड़ कर चली जाती है। इंसानियत की अनदेखी वे करते रहते हैं। अपनी पत्नी सोर्याली का सबल सिंह अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में देवी के रूप में देखते हैं। उन्हें अपने किए पर पश्चाताप तो होता है लेकिन अब कुछ नहीं किया जा सकता। उपन्यास 'वाहन को पाठक जब भी पढ़ेंगे उनके अन्तर में यह प्रश्न जरूर उठेगा कि जाने–अनजाने मनुष्य जो भी अमानवीय कृत्य करता है उसके लिए पश्चाताप अवश्य करना पड़ता है। यह सत्य सार्वकालिक है। सबल सिंह सरीखे पुरूषों के लिए उपन्यास के माध्यम से यह सन्देश भी है कि पीढियों के अन्तराल को समझने तथा जिद्दी स्वभाव के चलते क्षति होने की सम्भावना सदैव रहती है।

पानू खोलिया के अप्रकाशित उपन्यासों में से 'जो अपने थे', की हस्तलिखित प्रति उनके पास सुरक्षित है। इस आंचलिक उपन्यास में पुखपाल तथा लछम दो भाईयों के संघर्ष का चित्रण है। लछम रखैल का बेटा है और भाई पुखपाल तथा समाज उसे हेय दृष्टि से देखता है। परोपकारी तथा चरित्रवान् लछम पर सुखपाल आरोप लगाता है कि उसकी पत्नी के साथ लछम के अवैध सम्बन्ध हैं। स्वाभिमानी लछम आपा खो बैठता और भाई पुखपाल की हत्या कर देता है। हत्या के जुर्म में लछम को सजा हो जाती है। सजा पूरी हो जाने के बाद लछम अपने टूटे–फूटे घर में वापस लौटता है और बीमारी के चलते उसके जीवन का अन्त हो जाता है। लछम जब तक जीवित रहा अपनी विधवा भाभी की मदद करता रहा, भतीजी की शादी में भी बढ़–चढ़कर सहयोग करता है। 'जो अपने थे' उपन्यास के माध्यम से उपन्सास कार ने यह सन्देश देना चाहा है कि सद्गुणी और चरित्रवान् व्यक्ति भी जब क्रोध पर नियंत्रण नहीं कर पाता तो जघन्य अपराध कर बैठना असम्भव नहीं होता। यह सत्य सदैव सत्य ही रहेगा। 'जो अपने थे' उपन्यास के पाठक सदैव याद रखेंगे कि क्रोध मानवीय दुर्बलता है और इसका परिणाम दुःखद होता है।

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि वर्तमान सन्दर्भ में भी पानू खोलिया का कथा साहित्य प्रासंगिक है क्योंकि इसके मूल में मानवतावादी दृष्टि है, उनके पात्र मानवीय दुर्बलता के चलते भी समय पर जाग उठने की क्षमता रखते हैं। आज का पाठक आपकी भव्याकृतियों के अध्ययन से आज के कुमाऊँ के समाज और संस्कृति को भली–प्रकार समझ सकता है।

सन्दर्भ :–

1. आधुनिकता और हिन्दी एकांकी– डॉ0 मक्खनलाल शर्मा – प्रेमशील प्रकाश, दिल्ली–संसकरणः 1994 पृ0 32
2. आस्था के चरण (भाग–2) डॉ0 नगेन्द्र – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 1992 पृ0 109
3. वही।
4. वही पृ0 114
5. वही पृ0 127
6. वही पृ0 129
7. वाहन पानू खोलिया–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2015, पृ0सं0 28
8. कुमाऊँ का इतिहास–बद्रीदत्त पाण्डे–श्याम प्रकाशन, अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा संस्करण 1997, पृ0 511
9. वही पृ0 513
10. अन्ना–पानू खोलिया–रोशनीवाला छेद' कहानी–मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ संस्करण : 1981, पृ0 17
11. वही 'एकलहा' कहानी–पृ0 183